विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 01- 11- 2021

फुदकू मेंढ़क

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको फुदकू मेंढ़क का अध्ययन करना है, जो इस प्रकार है।

नीलू घर से निकला तो रास्ते में उसे मिला—फुदकू मेंढ़क। एक गड्ढे में पड़ा गरदन उचकाए 'टर्र—टर्र' कर रहा था।

फौरन नन्हे नीलू ने गड्ढे के अंदर झुककर फुदकू मेंढ़क को बाहर निकालकर रख दिया।

गड्ढे बाहर आते ही फुदकू मेंढ़क फुदकने लगा। उसे देखकर नीलू को हँसी आ गई।

हँसो मत नीलू! अभी तो मुझे दौड़ में विश्व चैंपियन बनना है!—फुदकू मेंढ़क ने टर्र—टर्र करते हुए कहा।

एक दिन फुदकू ने नीलू ने कहा—अरे नीलू अगर तुम मेरे साथ दौड़ो तो मुझे बड़ी मदद मिलेगी।

दौड़ते समय फुदकू ने ऐसी छलाँगें लगाईं कि नीलू को पसीना आ गया। उसने फुदकू को हरा तो दिया, मगर देर तक हाँफता रहा। फिर एक दिन फुदकू ने नीलू को पछाड़ दिया। नीलू ने फुदकू मेंढ़क की पीठ थपथपाकर शाबाशी दी।

फुदकू मेंढ़क ने खुशी से टर्र—टर्र करते हुए कहा—मैंने मन में सोचा था कि जिस दिन तुम्हें

हरा दूँगा, ठीक उसी दिन पंपा सरोवर की ओर कूच करूँगा। अच्छा नीलू, विदा दो, अब मैं चला!

लगभग छह महीने बाद फुदकू लौटा तो उसके सिर पर सोने का मुकुट था। उस पर लिखा था—विश्वविजयी मेंढ़क—फुदकू!

नीलू दौड़कर फुदकू मेंढ़क के पास गया और बोला—अरे वाह! तुम तो वाकई उस्ताद निकले।

कोरी प्रशंसा से कुछ नहीं होगा, नीलू!—फुदकू ने बिगड़कर कहा—क्या तुम कम तेज दौड़ते हो? कोशिश करो तो क्या तुम अच्छे धावक नहीं बन सकते? बड़े होकर भारत के लिए ओलंपिक में सोने को मेडल जीतना। मगर उसके लिए तैयारी अभी से करनी पड़ेगी।

नीलू ने अपने मन में पक्का निश्चय कर लिया था कि बड़ा होकर वह भी ओलंपिक में जरूर हिस्सा लेगा और सारे संसार को फुदकू मेंढक की कहानी भी सुनाएगा।

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन सामग्री पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें-

****

ज्योति